Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 6 | ISSUE : 5 | MAY 2020

राजस्थान के स्वाधीनता सग्रांम में भील जनजाति का योगदान।

डॉ. मुन्नी कुमारी [1]

[1] सहायक आचार्य हिन्दी, श्रीमती गोमतीदेवी पी.जी. महाविद्यालय, बड़ागाँव, जिला झुन्झुनूं, राजस्थान

ABSTRACT:

KEYWORDS:

भील जनजाति राजस्थान की सबसे प्राचीन जनजाति है। भील शब्द की उत्पत्ति द्रविड़ भाषा के 'बिलू' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है कमान, तीर कमान से अत्यधिक निपुण होने के कारण जनजाति को यह नाम मिला। भील जनजाति दक्षिणी राजस्थान की मूल निवासी रही है। इनका इतिहास इस क्षेत्र में पाषाण काल से अस्तित्व में रहा है इस प्रजाति का लिखित प्रमाण छठी सदी के आस–पास 'कथासरितासागर' में भील का उल्लेख भील मुखिया द्वारा बिख्याचल के शासक के कड़ा मारने के संदर्भ में मिलता है। परन्तु पिछले चार दशकों से भारतीय पुरातत्ववेताओं ने दक्षिणी राजस्थान के विभिन्न पूरास्थलों यथा, बागोर, गिलूण्ड, बालाथल, नगरी, आहड़ ईसवाल, जावर आदि स्थलों के उत्खनन में प्राप्त अवशेषों से इस जनजाति के निवास की प्राचीनता के प्रमाण की जानकारी मिलती है।

दक्षिणी राजस्थान में सर्वप्रथम आहड़ नदी के किनारे धूलकोट नामक स्थान पर एक संस्कृति विकसित हुई, आहड़ संस्कृति में भी भील जनजाति की संस्कृति के प्रति समानताओं के प्रमाण मिलते हैं, जिसमें मुख्यत है भील के आवास ठीक उसी प्रकार के बने हुए हैं जैसे आहड़ के मनुष्य ने 4000 वर्ष पूर्व बनाए गज समानता भी स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाली बांधनी की डिजाइन यहाँ से प्राप्त लाल, काली मिट्टी के बर्तनों पर की गई सफेद चित्रकारी से मिलती है।

मौर्य एवं गुप्त काल में यह जनजाति डूंगरपुर बांसवाड़ा किष्टिकन्धापुर ऊपरमाल व भोमट क्षेत्र की पहाड़ियों एवं घने जंगलों में कृषि एवं शिकार करके अपनी आजीविका चला रहे थे। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में भी लोगों के जीवन से संबंधित जानकारी थोड़ी सुस्पष्ट जो जाती है। शिवि सिक्कों एवं यूनानी के आक्रमण से स्पष्ट है कि माध्यमिका एवं प्रमुख नगरीय केन्द्र था तथा क्षेत्र में वे इसके आसपास रहने वाले निवासियों का शकों एवं आंध्रो के वंशजों के साथ काफी मेलजोल था। सातवीं शताब्दी में नागादित्य ने नागदा की स्थापना की। नागादित्य का उत्तराधिकारी शिलादित्य हुआ। वि.स.703 के सामोली शिलालेख से उसके काल में अरण्यवासनी देवी का मंदिर बनाए जाने का संकेत मिलता है।

आरम्भिक गुहिलोत शासकों में बापा रावल बहुत प्रसि(एव महत्त्वपूर्ण शासक हुआ। यह नाम न होकर एक उपाधि थी कर्नल टॉड ने शिलादित्य को कविराज श्यामलदास ने शिलादित्य के पोते महेन्द्र के पुत्र कालभोज को तथा भंडारकर व मजुमदार ने काल भोज के पुत्र खुम्माण को बापा रावल माना है। टॉड ने लिखा कि बापा भीलों के मध्य ही पला व बड़ा हुआ और बहुत ही कम उम्र में ही ऊंद्री व ओगना, पानरवा के भील युवकों बालव व देवा ने अपने रक्त से टीका करके उसे अपना शासक घोषित कर दिया था।

बप्पा के समय चित्तौड़ पर मौर्यवंशी शासक मान शासक कर रहा था। इसकी जानकारी वि.सं.770 के पुठौलो शिलालेख से मिलती है। बप्पा ने भीलों की सामाजिक स्थिति का अंदाजा लगाना अत्यधिक कठिन है, पर इतना जरूर है कि उस समय भीलों ने पहाड़ी प्रदेशों में अपना प्रभुत्व स्थापित कर रखा था।

13वीं शताब्दी में गुहिल–भील पारम्परिक संबंधों की जानकारी एकलिंगजी मंदिर में वि.सं.1225 के अभिलेख[6] में भी मिलती है। मेवाड़ के महाराणा मोकल के वि.सं.1485 के शृंगी)षि नामक ;एकलिंग के समीपद्ध के शिलालेख में लिखा है कि हम्मीर ने लीलबाड़ा को छीना। गोडवाड़ के निकट पहाड़ी स्थान है, गोडवाड की तरफ से मेवाड़ पर होने वाले हमले को रोकने के लिए यह मोर्चे के अच्छे स्थानों मे है। गौरी शंकर हीराचन्द ओझा का मानना है कि हम्मीर के समय यह क्षेत्र चौहानों के अधिकार था, चौहानों के विरू(अभियान में इस पहाड़ी क्षेत्र के भीलों के साथ उसका संघर्ष हुआ होगा।

मंडोर के राव रणमल ने भीलों की सहायता से ही महाराणा मोकल के हत्यारों की गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की थी। मेवाड़ रियासत में भील, राजपूत संबंधों का अनूठा उदाहरण मेवाड़ के भील संबंधों में दृष्टिगोचर होता है। मेवाड़ पर 1568 ई. में चित्तौड़ पर मुगलों का अधिकार हाने के कारण महाराणा उदयसिंह गिरवा की पहाड़ियों में आ बसे, उदयसिंह की मृत्यु के बाद महाराणा प्रताप ने अपनी कुल मर्यादा का ध्यान रखा। प्रताप को इस क्षेत्र के भीलों की वीरता तथा गुणों की भली भाँती जानकारी थी, इसलिए उन्हें पूरा मान सम्मान दिया।

महाराणा प्रताप ने अपनी सैन्यअवस्था में भीलों को मेवाड़ के विभिन्न पर्वतीय स्थानों पर नियुक्त किया। महाराणा द्वारा जो दायित्व इन्हें सोंपे वे निम्न थे–

1. विभिन्न में मुगलों की गतिविधियों पर निगरानी रखना।
2. मुगलों की बाहर से आने वाली रसद सामग्री को लूट कर महाराणा तक पहुँचाना।
3. गुप्तचर के रूप में विभिन्न सूचनाएँ महाराणा तक पहुँचाना।
4. गुरिल्ला यु(में महाराणा की सहायता करना आदि।

1576 ई. में हल्दीघाटी यु(के पश्चात् अकबर की सेना न तो प्रताप को मार सकी और न ही उसे जिंदा पकड़ सकी इस यु(के पश्चात् महाराणा प्रताप ने पर्वतीय जीवन व यु(नीति का एक नया तरीका आरंभ किया। उसने कुंभलगढ़ से लेकर आसींद, भैंसरोडगढ़ के पर्वतीय नाकों पर भीलों की विश्वस्त पालों के मुखियाओं को निगरानी और मुकाबला करने के लिए तैनात किए, गौरी शंकर हीराचंद ओझा ने लिखा है कि शाही सेना से केवल मेवाड़ का उत्तर–पूर्वी प्रदेश ही घिरा हुआ था, इतने बड़े पहाड़ी प्रदेश को घेरने के लिए लाखों की संख्या में सेना चाहिए। वह अपने सरदारों सहित विस्तृत पहाड़ी प्रदेश में निडर रहता था और उसके स्वामी भक्त एवं वीर प्रकृति के हजारों भील, शाही सेना की हलचलों को 40–50 मील की दूर तक की खबरों को 5–7 घंटों में महाराणा के पास पहुँचा देते थे।

महाराणा प्रताप की मृत्यु के बाद अमर सिंह मेवाड़ का शासक बना, मुगल शास के पुत्र शहजादे परवेज में मेवाड़ पर अपना अभियान शुरू किया शहजादे के आक्रमण का सामना करने के लिए भीलों ने संघर्ष जारी रखा पानरवा के भील सरकार पूजा के पुत्र रामा ने हजारों भीलों के साथ मुगल सना की रसद सामग्री को लूट लिया।

वीर विनोद, भाग 2, पृ.223द्ध महाराणा राजसिंह के काल में यहाँ के भीलों ने मांडलगढ़, दरीब, मांडल, बनेडा, शाहपुरा, जहाजपुर, केकड़ी तक मुगल सेना को परेशान कर लूटा। राजसिंह के इस अभियान में भीलों ने मालुपूरा को 11 दिन तक लूटा, मालपुरा की घटना का वर्णन सदाशिव नागर ने संस्कृत महाकाव्य राजरत्नाकर में भी किया है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि भील जनजाति दक्षिणी राजस्थान के मूल निवासी थे, राजपूतों के साथ लम्बे समय तक सहयोग एवं संघर्ष की स्थिति बनी रही। समय–समय पर राजपूत शासकों ने भीलों की वफादारी व साहस के गुणों को पहचानते हुए उनकी सेवाओं का उपयोग किया, भीलों के सहयोग से उन्होंने अपने राज्य को

मजबूती प्रदान की व शत्रुओं से उसकी रक्षा की राजपूत शासकों ने भीलों से यु(के कुछ तरीके सीखे बदले में भूमि पर उनके अधिकार को स्वीकार किया। उन्हें मार्गों की सुरक्षा का कार्य सौंपा गया तथा महत्त्वपूर्ण किलों, मार्गों एवं रक्षा स्थलों को उनकी निगरानो में रखा।

राजस्थान में भील, मीणा और शबर ;सहरियाद्ध आदि जनजातियों का निवास अज्ञात काल से रहा है। घनघोर जंगलों से आचछादित मेवाड़ के पहाड़ों में बना संपदा और आखेट पर आश्रित रहकर जीवन यापन करने वाले भीलों का अपने क्षेत्र में कभी स्वतंत्र साम्राज्य था पर अन्य क्षत्रिधर्मी जातियों से पराजित होने और उनका अधिपत्य स्वीकार कर लेने पर भी अथस्वतंत्र अवस्था में उन्होंने अपना अस्तिव बनाये रखा। दिल्ली और मेवाड़ के आस–पास संस्थापित मुस्लिम शासको के विनाशकारी आक्रमणों के समय इन वन पुत्रों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा हेतु यहाँ के राजाओं के साथ पूरा सहयोग किया।

महाराणा प्रताप का तो बचपन और जवानी का पूर्वा(ही इन जनजातियों के साथ बीता था। मेवाड़ की राजगद्दी पर असीन होने के उपरान्त उन्होनें इन वनवासी जातियों के साथ अपने संबंधो को और भी अधक दृढ़ किया। इसका प्रतिफल उन्हें खमनोर में मुगल सेनापति मानहिसं के नेतृत्व मे आई मुगल सेना के साथ हुए संग्राम में मिला। संवत् 1633 वि;सन्1576ई. द्ध में 18 जून को इस संग्राम में राजपूतों के साथ अन्य हिन्दू मूस्लिम जाति के वीरों के साथ भील यौ(ा भी अपार संख्या में सम्मिलित थे। मानसिंह के आक्रमणार्थ मेवाड़ की ओर प्रस्थान की सूचना पर जब महाराणा ने कुंभलगढ़ से उतर कर गोगूंदा की किलाबंदी की। उस समय वहाँ उपस्थित सभी राजपूत सामंतो के साथ भील भी उनके साथ थे।'' श्री गौरीशंकर ओझा ओर श्री जी.एन.शर्मा भी इसे स्वीकार करते हैं। महराणा राजसिंह के राज्यकाल में बनारस से आकर रारत्लाकर शीर्षक महाकाव्य की रचना करने वाले पंडित सदाशिव नागर ने महाराणा को यु(में सहयोग दे रहे भील वीरों का बड़ा ही सरस वर्णन किया है। इस महाकाव्य के सातवें सर्ग में श्लोक सं.14 में महाराणा की सैन्य शक्ति का वर्णन करते हुए वह लिखता है कि प्रताप की सेना लाख भीलों की पैदल सेना थी।

शक्तयायुधाः शतसहस्त्रकमशववारा की

लक्षत्रंय किल पदातिजनाः किराता।

दनन्तावलाश्र शत पंचकामाजिधीराः

एतदूबल समभवत्किल राणपक्षे।7–4

सैन्य शक्ति विषयक कवि का यह वर्णन अत्यधिक अतिशयोक्तिपूर्ण है– उसमें कोई सन्देह नहीं पर इससे वह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि राणा की सेना में सहयोग दे रहे इन जाति वीरों में भील भी अपार संख्या में थे। कवि का आशय संभवतः यह रहा हो कि राणा की तीन लाख पैदल सेना में भील भी थे। इसी सर्ग में मात्र 7 श्लोक आगे ही उसने इन भील वीरों की संख्या घटा कर सत्तर हजार कर दी। अन्य स्त्रोतो में हमें ज्ञात है कि राणा की सेना में इतने सैनिक नहीं थे– पर उसने मानसिंह की सैनिक शक्ति का भी वैसा ही अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करते हुए भील वीरों की संख्या सत्तर हजार बताई है तो इस प्रकार के वर्णन में हम उसे साहित्यि काव्य–रूढ़ियों का पालक समझ कर क्षमा कर सकते है। उसके द्वारा इन भीलों का काव्यात्मक वर्णन का अवलोकन कीजिए–

कालांजना चलनिभ अथ सत्रियुकताः

सप्तायुतं समिति राण पुरन्दरेण।

भिल्ला महाम्बुक्षपटा इव तीब्रवेग

अल्लान्वर्ष ररि सैन्य महीतलेषु।।7–24

यु(के गहरे काले रंग के पर्वत के समान काले रंगवाले, महाराणा प्रताप के द्वारा नियुक्त, भीलों ने विशाल घन घटाओं के समान मैदानी भाग ;भूमितलद्ध में स्थित विशाल शत्रु पर भालों से वर्षा की। उक्त श्लोक में आय राण पुरन्दर शब्द से डॉ.गोपीनाथ शर्मा ने राणा पूंजा अर्थ करते हुए उसकी यु(में उपस्थिति बताई थी वह उचित नहीं थी। इन भीलों की विशेषता और बाण संधान की विधि का वर्णन करते हुए कवि लिखता है। हल्दीघाटी ;खमनोरद्ध के यु(के उपरान्त महाराणा मुगल सनाओं के सतत होते रहे हमलों से रक्षा हेतु आक्रमण के समय मेवाड़ की पहाड़ी भागों में स्थान बदलते रहे। ऐसी स्थिति में भी भील उन्हें संरक्षण देते और आक्रमण के समय उन्हें गुप्त स्थान पर रखकर सुरक्षा प्रदान करते थे। टॉड ने लोकानुश्रति के आधार पर लिखा है कि । ने यदा कदा महाराणा के बच्चों को टोकसों ;पालनोंद्ध में लिटाकर उन्हें जावर की पहाड़ियों में रखा। इन पालनों के कडे और नट आज भी उन कंदराओं में मौजूद है। पश्रिमी भारत की यात्रा में लिखा है कि तीर कमानों से सदा सन(रहने वाले भीलों का राणा पर सदा आभार रहा है– क्योंकि उन्होंने राणाओं की रक्षा तो की ही, उससे भी बढ़कर उन्होने राजूपतोंकी महिलाओं और लड़कियों को उन शत्रु से लोहा ले रहा था तब उसका खजाना वे जावर की खानो में ले जा रहे थे और जब वे स्थान भी सुरक्षित नहीं दिखाई दिये तो वे उसे घाटियों से उस मार्ग से हाकर अन्यत्र ले गये, जिसकी उन्ही को जानकारी थी। डॉ.देवीलाल पालीवाल ने महाराणा प्रताप की कूटनीति और रणनीति का वर्णन करते समय अरावली पर्वतमाला में रहने वाली भील जाति के द्वारा प्रताप की अने समस्याओं को हल करने में सहयाग, रापूत परिवार के स्त्री बच्चो की सुरक्षा,रसद आदि लाने ले जाने, संदशवाहन, और गुप्तचर विभाग के कार्य संचालन में भीलों के प्रदत्त सहयोग का उल्लेख किया है। डॉ. पालीवाल ने लिखा है कि गुप्त और विकट मार्गो से परिचित भील बिना थके मीलों तक पहाड़ो की चढ़ाइयां पर कर लेते थे। किलकारी

मारकर या ढोल बजा कर संकेतों द्वारा ये एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर संदेश पहुँचा देते थे। वफादारी उनका सबसे बड़ा गुण था।'' डॉ. मीना गौड़, डॉ. देव कोठारी तथा अन्य विद्वानों ने यही बात यथावत इन्हीं शब्दों में या अपनी भाषा म व्यक्त की है। डॉ. पालीवाल सहित अन्यों के इस विवरण को हम कर्नल टॉड के ही विवरण की व्याख्या के रूप में अपने–अपने शब्दों में लिखा गया प्रारूप मान सकते हैं।

मेवाड़ के पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले मेर, मीणा गरासिया आदि वनवासी जातियों का भी महाराणा को अवश्य ही कोई सहयोग मिलता रहता होगा। पर समकालीन किसी भी प्रकार के स्त्रोत के अभाव में इस विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता।

REFERENCES

1. श्रीचन्द जेन,वनवासी भील और उनकी संस्कृति पृ.335

2. सी.एल.शर्मा, मत्स्य संघ का पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक इतिहास , पृ.118

3. एच.डी सांकरिया, आर्किलयोजी इन राजस्थान साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, 1988,पृ.87–

4. जी.एन.शर्मा, सोशियल एण्ड पोलिटिकल अवेकिग अमंग द ट्राइबल्स ऑफ राजस्थान,पृ.5

5. सामौली का वि.सं.703 का अभिलेख, एपिग्राफिया इण्डिका, भाग–20,पृ.97–99

6. कर्नल टॉड, एनाल्स एण्ड एटिक्बीटीज ऑफ राजस्थान,पृ.259

7. बी.डी. चटापाध्याय, मूल अंग्रेजी आलेख, राजस्थान भारती, प्रो.एस.आर. गोयल अभिनन्दन भाग में प्रकाशित।

8. गौरी शंकर ओझा,वीर विनोद,जिल्द 2,पृ.15

9. कर्नल टॉड, एनाल्स एण्ड एटिकीटीज ऑफ राजस्थान भाग–,पृ.271–272

10. पश्रिमी भारत की यात्रा।

11. अनु.गो.ना.बहुगुणा,पृ.41, डॉ. देवीलाल पालीवाल।